आलस्य और अलबेलापन - 21

अव्यक्त बापदादा :- (07.06.1977)

➳ _ ➳ जैसे बाप-दादा ड्रामा के रहस्य को मास्टर त्रिकालदर्शी बनाने के कारण सर्व रहस्य बच्चों के आगे स्पष्ट करते हैं। बाप ड्रामा के राज अनुसार पुरुषार्थियों के नम्बर वा राजधानी के रहस्य सुनाते हैं कि ड्रामा में राजधानी में सब प्रकार के पद पाने वाले होते हैं। वा माला नम्बर वार बनती है तो सब महारथी तो बनेंगे नहीं। अथवा सभी विजयमाला में तो आयेंगे नहीं। सब महाराजा तो बनेंगे नहीं। इसलिए हमारा पार्ट ही ऐसा दिखाई देता है। बाप सुनाते हैं एडवान्स में जाने के लिए, लेकिन बच्चे एडवान्स जाने की बजाए उल्टा एडवान्टेज (लाभ) उठा लेते हैं। अर्थात् अपने अलबेलेपन और आलस्य को नहीं मिटाते लेकिन बाप की बात का भाव बदल उसी बात को आधार बना देते हैं। और बाप को सुनाते हैं कि आपने ऐसे कहा।

➳ _ ➳ इसी प्रकार अपने भिन्न-भिन्न स्वभाव के वश यथार्थ बातों का भाव बदल, रुकती कला की बाज़ी बहुत अच्छी दिखाते हैं। मायाजीत बनने की युक्तियों को समय पर कार्य में लगाने का अटेंशन खुद कम रखते हैं, लेकिन अपने आप को बचाने का साधन - बाप के बोल को यूज़ करते हैं, क्या कहते हैं कि आपने ही तो कहा है कि माया बड़ी दुस्तर है। ब्रह्मा बाप को भी नहीं छोड़ती, महारथियों को भी माया वार करती है। जब ब्रह्मा बाप को भी नहीं छोड़ती, महारथियों को भी नहीं छोड़ती तो हमारे पास आई और हार खाई तो क्या बड़ी बात है, यह तो होना ही है, अन्त तक यह तो चलना ही है। इस प्रकार पुरुषार्थ में रुकने के बोल, अपना आधार बनाए चढ़ती कला में जाने से वंचित हो जाते हैं।

➳ _ ➳ अपने आप को चेक करो, चलते-चलते खुशी कम क्यों हो जाती है? वा तीव्र पुरुषार्थ का उमंग, उत्साह कम क्यों हो जाता? वा योगयुक्त की बजाए व्यर्थ संकल्पों तरफ क्यों भटक जाते? वा अपने स्वभाव-संस्कारों का बन्धन क्यों नही चुक्तू होता? कारण क्या होता है? कारण जानते हो? विशेष कारण है - जैसे शुरू में आते हो तो बाप से प्राप्त हुए पुरुषार्थ की युक्तियों और मेहनत से करने लग जाते हो। दिन-रात थकावट अथवा माया की रुकावट कोई की परवाह नहीं करते। बाप मिला, वर्सा पाना है, अधिकारी बनना है - इसी नशे में कदम को बहुत तीव्र रूप से आगे बढ़ाते चलते हो।

➳ _ ➳ लेकिन अब क्या करते? जैसे आजकल के जमाने में मेहनत करना मुश्किल लगता है। तनख्वाह चाहिए लेकिन मेहनत नही चाहिए। वैसे ब्राह्मण आत्माएं भी मेहनत से अलबेली हो जाती हैं वा आलस्य में आ जाती हैं। बनना चाहते सभी महावीर, महारथी, लेकिन मेहनत प्यादे की भी नही करते। बनी बनाई स्टेज चाहते हैं - मेहनत से स्टेज बनाने नहीं चाहते। सोचेंगे हम कम किसमें भी न होवे, नाम महारथियों के लिस्ट में हो। लेकिन महारथी का वास्तविक अर्थ है 'महारथी की महानता"; उसमें स्थित होना मुश्किल अनुभव करते हैं। सहयोगी नाम का एडवान्टेज ठीक उठाते हैं।

➳ _ ➳ इस कारण जो कदम-कदम पर मेहनत और अटेंशन चाहिए, पुरुषार्थी जीवन की स्मृति चाहिए, बाप के साथ की समर्थी चाहिए, वह प्रेक्टिकल में नहीं है। मेहनत नहीं करने चाहते, लेकिन बाप की मदद से पार होना चाहते हैं। बाप का काम ज्यादा याद रखते हैं, अपना काम भूल जाते हैं, इस कारण जो युक्तियाँ बताई जाती हैं वह कार्य में नहीं लगाते, समय पर यूज करने नहीं आती। लेकिन बार-बार बाप से पूछने आते हैं - योग क्यों नही लगता, क्या करूं? बन्धन क्यों नहीं कटता, क्या करूं? जब रिवाईज कोर्स चल रहा है, रियलाइजेशन कोर्स (अनुभूति) चल रहा है, तो क्या कोर्स में बाप-दादा ने यह बताया नहीं है? कुछ रह गया है क्या जो फिर सुनाना पड़े? यह तो पहले दूसरे क्लास का कोर्स है। इस

कारण सुने हुए को मनन करो। **मनन न करने से शक्तिशाली न बन कमज़ोर हो गए हो। और कमज़ोर होने के कारण बार-बार रुकते हो।**

➳ _ ➳ निमित बनी हुई आत्माओं की चढ़ती कला से ही सर्व का भला है। चढ़ती कला का आधार आप विशेष आत्माओं के ऊपर है। **आपकी चढ़ती कला से ही सर्व आत्माओं का भला अर्थात् कल्याण होता है।** सर्व आत्माओं की बहुत समय की आशाएं - मुक्ति को प्राप्त करने की, आपकी चढ़ती कला के आधार से ही पूर्ण होती हैं। सर्व आत्माओं की मुक्ति प्राप्ति का आधार, आप आत्माओं के जीवन मुक्ति की प्राप्ति है। ऐसे अपने को आधार मूर्त समझ चलते हो? देने वाला दाता बाप है - लेकिन निमित किसको बनाया है? वर्सा बाप द्वारा प्राप्त होता है, लेकिन बाप भी निमित्त बच्चों को बनाते हैं।

➳ _ ➳ इतना अटेंशन हर कदम अपने ऊपर रहता है? कि हम विशेष आत्माओं के आधार से सर्व आत्माओं का भला है। यह स्मृति रखने से अलबेलापन और आलस्य समाप्त हो जाएगा, जो वर्तमान समय किसी न किसी रूप में मैजारिटी में दिखाई देता है। जिस कारण चढ़ती कला के बजाए रुकती कला में आ जाते हैं और इस रुकने की कला में भी बहुत होशियार हो गए हैं। होशियारी क्या करते हैं? ज्ञान की सुनी हुई बातें वा समय-समय पर जो युक्तियाँ बाप द्वारा मिलती रहती हैं, उन युक्तियों वा बातों को यथार्थ से यूज़ नहीं करते, मिस यूज करते हैं। भाव को बदल बोल को पकड़ लेते हैं। अपने पुराने स्वभाव के वशीभूत हो यथार्थ भाव को, स्वभाव वश बदल लेते हैं।

➢➢ बाबा बच्चों को मास्टर त्रिकालदर्शी बनाते हैं और सर्व रहस्य बच्चों के आगे स्पष्ट करते हैं

➳ _ ➳ बाप ड्रामा के राज अनुसार पुरुषार्थियों के नम्बर वा राजधानी के रहस्य सुनाते हैं

→ कि ड्रामा में राजधानी में सब प्रकार के पद पाने वाले होते हैं

→ माला नम्बर वार बनती है तो सब महारथी तो बनेंगे नहीं

→ सभी विजयमाला में तो आयेंगे नहीं

→ सब महाराजा तो बनेंगे नहीं। इसलिए हमारा पार्ट ही ऐसा दिखाई देता है

➳ _ ➳ बाप बताते हैं एडवान्स में जाने के लिए लेकिन बच्चे उल्टा एडवान्टेज (लाभ) उठा लेते हैं

➳ _ ➳ **अपने अलबेलेपन और आलस्य को नहीं मिटाते लेकिन बाप की बात का भाव बदल उसी बात को आधार बना देते हैं**

➳ _ ➳ अपने भिन्न-भिन्न स्वभाव के वश यथार्थ बातों का भाव बदल, रुकती कला की बाज़ी बहुत अच्छी दिखाते हैं

➳ _ ➳ मायाजीत बनने की युक्तियों को समय पर कार्य में लगाने का अटेंशन खुद कम रखते हैं

➳ _ ➳ **अपने आप को बचाने का साधन - बाप के बोल को यूज़ करते हैं**

→ कहते हैं कि आपने ही तो कहा है कि माया बड़ी दुस्तर है

→ ब्रह्मा बाप को भी नहीं छोड़ती, महारथियों को भी माया वार

करती है

→ जब ब्रह्मा बाप को भी नहीं छोड़ती, महारथियों को भी नहीं छोड़ती तो हमारे पास आई और हार खाई तो क्या बड़ी बात है

→ यह तो होना ही है, अन्त तक यह तो चलना ही है

■ **इस प्रकार पुरुषार्थ में रुकने के बोल, अपना आधार बनाए चढ़ती कला में जाने से वंचित हो जाते हैं**

➳ _ ➳ अपने आप को चेक करना है

→ चलते-चलते खुशी कम क्यों हो जाती है?

→ तीव्र पुरुषार्थ का उमंग, उत्साह कम क्यों हो जाता?

→ योगयुक्त की बजाए व्यर्थ संकल्पों तरफ क्यों भटक जाते?

→ अपने स्वभाव-संस्कारों का बन्धन क्यों नही चुक्तू होता

■ विशेष कारण है - शुरुआत में जो भी पुरुषार्थ की युक्तियाँ मिलती हैं और मेहनत करने लगते हैं

■ दिन-रात थकावट अथवा माया की रुकावट कोई की परवाह नहीं करते

■ बाप मिला, वर्सा पाना है, अधिकारी बनना है - इसी नशे में कदम को बहुत तीव्र रूप से आगे बढ़ाते चलो

➳ _ ➳ आजकल के जमाने में मेहनत करना मुश्किल लगता है

→ तनख्वाह चाहिए लेकिन मेहनत नही चाहिए

→ वैसे ब्राह्मण आत्माएं भी मेहनत से अलबेली हो जाती हैं वा आलस्य में आ जाती हैं

→ **<u>बनना चाहते सभी महावीर, महारथी, लेकिन मेहनत प्यादे की भी नही करते</u>**

→ बनी बनाई स्टेज चाहते हैं - मेहनत से स्टेज बनाने नहीं चाहते

→ सोचेंगे हम कम किसमें भी न होवे, नाम महारथियों के लिस्ट में हो

→ लेकिन महारथी का वास्तविक अर्थ है 'महारथी की महानता"; उसमें स्थित होना मुश्किल अनुभव करते हैं

→ इस कारण जो कदम-कदम पर मेहनत और अटेंशन चाहिए, पुरुषार्थी जीवन की स्मृति चाहिए, बाप के साथ की समर्थी चाहिए, वह प्रेक्टिकल में नहीं है

→ **मेहनत नहीं करने चाहते, लेकिन बाप की मदद से पार होना चाहते हैं**

→ बाप का काम ज्यादा याद रखते हैं, अपना काम भूल जाते हैं

→ **जो युक्तियाँ बताई जाती हैं वह कार्य में नहीं लगाते, समय पर यूज करने नहीं आती**

→ लेकिन बार-बार बाप से पूछने आते हैं-

- योग क्यों नही लगता, क्या करूं?
- बन्धन क्यों नहीं कटता, क्या करूं
  - कारण है सुने हुए को मनन नहीं करते
  - **मनन न करने से शक्तिशाली न बन कमज़ोर हो जाते और बार-बार रुकते हो**

➳ _ ➳ आपकी चढ़ती कला से ही सर्व आत्माओं का भला अर्थात् कल्याण होता है

➳ _ ➳ सर्व आत्माओं की मुक्ति प्राप्ति का आधार, आप आत्माओं के जीवन मुक्ति की प्राप्ति है

➳ _ ➳ **हम विशेष आत्माओं के आधार से सर्व आत्माओं का भला है**

→ यह स्मृति रखने से अलबेलापन और आलस्य समाप्त हो जाएगा

→ जिस कारण चढ़ती कला के बजाए रुकती कला में आ जाते हैं

- ज्ञान की सुनी हुई बातें वा समय-समय पर जो युक्तियाँ बाप द्वारा मिलती रहती हैं, उन युक्तियों वा बातों को यथार्थ से यूज़ नहीं करते, मिस यूज करते हैं
- भाव को बदल बोल को पकड़ लेते हैं, अपने पुराने स्वभाव के वशीभूत हो यथार्थ भाव को, स्वभाव वश बदल लेते हैं

अव्यक्त बापदादा :- (16.06.1977)

➳ _ ➳ सदैव संगम युग का श्रेष्ठ खजाना 'अतिइन्द्रिय सुख' है ऐसे खजाने की प्राप्ति का अनुभव करते हो? अति इन्द्रिय सुख का खजाना प्राप्त हुआ है? खजाना मिला हुआ खो क्यों जाता? पहरा कौन सा? अटेंशन। अटेंशन कम करना अर्थात् अपने प्राप्त किए हुए खजाने को खो देना। सारे कल्प में फिर यह खजाना प्राप्त होगा? तो ऐसी अमूल्य चीज़ कितनी संभाल कर रखनी होती है? स्थूल में भी बढ़िया चीज़ संभाल कर रखते हैं। जैसे वहाँ भी पहरेदार अलबेले होते तो नुकसान कर देते, यहाँ भी अलबेलापन आता तो खजाना खो जाता। बार-बार अटेंशन चाहिए।

➳ _ ➳ ऐसे नहीं - अमृतवेले याद में बैठे, अटेंशन दिया फिर चलते-फिरते खो दिया। अमृतवेले अटेंशन देते और समझते सब कुछ कर लिया, लेकिन चलते फिरते भी अटेंशन देना है। अतिइन्द्रिय सुख का अनुभव अभी नहीं किया, तो कभी नहीं करेंगे। पाँच हजार वर्ष के हिसाब से यह कितना श्रेष्ठ समय है। इतनी श्रेष्ठ प्राप्ति के लिए थोड़ा समय भी अटेंशन न रखेंगे तो क्या करेंगे? कर्म और योग दोनों साथ चाहिए। योग माना ही याद का अटेंशन, जैसे कर्म नहीं छोड़ते वैसे याद भी न छूटे। इसको कहा जाता है 'कर्मयोगी'।

➢➢ संगम युग का श्रेष्ठ खजाना है

➳ _ ➳ 'अतिइन्द्रिय सुख'

➳ _ ➳ सारे कल्प में फिर यह खजाना प्राप्त होगा? तो ऐसी अमूल्य चीज़ कितनी संभाल कर रखनी होती है

➳ _ ➳ **अलबेलापन आता तो खजाना खो जाता इसलिए बार-बार अटेंशन चाहिए**

→ **सिर्फ अमृतवेले अटेंशन देते और समझते सबकुछ कर लिया**

- चलते-फिरते भी अटेंशन देना है
- सारे दिन में कर्म के साथ योग भी रहे
- **जैसे कर्म के बिना नहीं रहते वैसे योग के बिना भी नहीं**

अव्यक्त बापदादा :- (28.06.1977)

➳ _ ➳ दूसरी बात 'वेट कम करो'। एक तो पिछले जन्मों का रहा हुआ हिसाबकिताब का बोझ समाप्त करने में लगे हो, लेकिन वह बोझ कोई बड़ी बात नहीं है। **ब्राह्मण बनकर वा ब्रह्माकुमार/ब्रह्माकुमारी कहलाकर विश्व-कल्याणकारी वा विश्वसेवाधारी कहलाकार फिर भी अगर ऐसा कोई विकल्प वा विकर्म करते हैं तो वह बोझ उस बोझ से सौगुणा है।** ऐसे कितने प्रकार के बोझ अपने संस्कारों के वश, स्वभाव के वश, ज्ञान, बुद्धि के अभिमान वश, नाम और शान के स्वार्थ वश, स्वयं के सैलवेशन प्राप्त करने के वश, वा अलबेलेपन वा आलस्य के वश, अब तक कितने बोझ उठाए हैं?

➳ _ ➳ सदैव यह ध्यान पर रखना है कि ज्ञानी तू आत्मा कहलाते अथवा सर्विसएबुल कहलाते ऐसा कोई कर्म वा वातावरण फैलाने के वायब्रेशन उत्पन्न होने के निमित न बने जिससे सर्विस के बजाए डिस सर्विस हो। क्योंकि सर्विस भी हो लेकिन एक बार की डिस-सर्विस दस बार की सर्विस को समाप्त कर देती है। जैसे रबड़ मिट जाता है वैसे एक बार की डिस-सर्विस दस बार के सर्विस के खाते को खत्म कर देती है। और वह समझता रहता कि मैं बहुत सर्विस करता हूँ। लेकिन खाता खाली होने के कारण निशानी दिखाई भी देती हैं लेकिन अभिमान के वश बाहर से मियांमिट्ठू बन जाते हैं।

➳ _ ➳ निशानी क्या होती है? एक तो याद में शक्ति वा प्राप्ति का अनुभव नहीं होता। अन्दर की सन्तुष्टता नही होगी। हर समय कोई न कोई परिस्थिति वा व्यक्ति वा प्रकृति का वैभव, स्थिति को हलचल में लाने के वा खुशी, शक्ति खत्म करने के निमित बनेंगे। बाहर का दिखावा इतना सुन्दर होगा जो अनेक आत्माएं उन्हें न परखने कारण सबसे अच्छा खुश मिजाज और पुरुषार्थी समझेंगे। लेकिन अन्दर बिल्कुल उलझन में खोखलापन होता है। नाम, शान का खाता फुल होता है - लेकिन खज़ानों का खाता, अनुभूतियों का खाता खाली के बराबर होता है अर्थात् नाम मात्र होता है।

➳ _ ➳ और निशानी क्या होगी? ऐसी आत्मा स्वयं विघ्नों के वश होने के कारण सेवा के कार्य में विघ्न रूप बन जाती है। नाम विध्न विनाशक है लेकिन बनते विघ्न रूप हैं। ऐसे आत्माओं के ऊपर समय प्रति समय के बोझ से वेट बढ़ने के कारण अनेक प्रकार के मानसिक व्यर्थ चिन्तन वा मानसिक अशान्ति, ऐसे अनेक रोग पैदा कर लेते हैं। दूसरी बात वेट होने के कारण पुरुषार्थ की रफ्तार तीव्र नहीं हो सकती। हाई जम्प (ऊँची कूद) तो छोड़ो लेकिन दौड़ भी नहीं लगा सकते। प्लान बनायेंगे कि यह करेंगे, यह करेंगे लेकिन सफल नहीं हो सकते। तीसरी गुह्य बात ऐसी वेट वाली आत्माएं, जो विघ्न रूप वा डिस-सर्विस के निमित बनती है, बाप को अर्पण किया हुआ अपना तनमन वा ईश्वरीय सेवा अर्थ मिला हुआ धन, अपने विघ्नों के कारण वेस्ट करती है अर्थात् सफ़लता नहीं पाती, उसके वेस्ट करने का भी बोझ चढ़ता है।

➳ _ ➳ इसलिए पापों की गहन गति को भी अच्छी रीति जानो। अब क्या करना है? वेस्ट मत करो और वेट कम करो। धर्मराज पुरी में जाने के पहले

अपना धर्मराज बनो। अपना पूरा चोपडा खोलो और चेक करो पाप और पुण्य का खाता क्या रहा हुआ है, क्या जमा करना है; और विशेष स्वयं प्रति प्लान बनाओ। पाप के खाते को भस्म करो। पुण्य के खाते को बढ़ाओ। बाप-दादा बच्चों के खाते को देखते हुए समझते हैं मालामाल हो जाए। (बरसात पड़ रही है) प्रकृति भी पाठ पढ़ा रही है। जैसे प्रकृति अपने मौसम वा समय प्रमाण अपने तीव्र गति से कार्य कर रही है ऐसे ब्राह्मणों की कमाई जमा करने की मौसम है। तो मौसम प्रमाण तीव्र रफ्तार से जमा करो।

➢➢ वेस्ट मत करो और वेट कम करो

➳ _ ➳ ब्राह्मण बनकर कोई विकल्प वा विकर्म करते हैं तो वह बोझ उस बोझ से सौगुणा है

➳ _ ➳ ब्राह्मण जीवन के बोझ

→ अपने संस्कारों के वश

→ स्वभाव के वश

→ ज्ञान, बुद्धि के अभिमान वश

→ नाम और शान के स्वार्थ वश

→ स्वयं के सैलवेशन प्राप्त करने के वश

→ वा अलबेलेपन वा आलस्य के वश

➳ _ ➳ ऐसा कोई कर्म वा वातावरण फैलाने के वायब्रेशन उत्पन्न होने के निमित न बने जिससे सर्विस के बजाए डिस सर्विस हो

→ **एक बार की डिस-सर्विस दस बार के सर्विस के खाते को खत्म कर देती है**

→ निशानी क्या होती है?

- **याद में शक्ति वा प्राप्ति का अनुभव नहीं होता**
- अन्दर की सन्तुष्टता नही होगी
- हर समय कोई न कोई परिस्थिति वा व्यक्ति वा प्रकृति का वैभव, स्थिति को हलचल में लाने के वा खुशी, शक्ति खत्म करने के निमित बनेंगे
- बाहर का दिखावा इतना सुन्दर होगा जो अनेक आत्माएं उन्हें न परखने कारण सबसे अच्छा खुश मिजाज और पुरुषार्थी समझेंगे,लेकिन अन्दर बिल्कुल उलझन में खोखलापन होता है
- नाम, शान का खाता फुल होता है - लेकिन खज़ानों का खाता, अनुभूतियों का खाता खाली के बराबर होता है अर्थात् नाम मात्र होता है

→ और निशानी क्या होगी?

- **ऐसी आत्मा स्वयं विघ्नों के वश होने के कारण सेवा के कार्य में विघ्न रूप बन जाती है**
- नाम विघ्न विनाशक है लेकिन बनते विघ्न रूप हैं
- ऐसे आत्माओं के ऊपर समय प्रति समय के बोझ से वेट बढ़ने के कारण अनेक प्रकार के मानसिक व्यर्थ चिन्तन वा मानसिक अशान्ति, ऐसे अनेक रोग पैदा कर लेते हैं
- वेट होने के कारण पुरुषार्थ की रफ्तार तीव्र नहीं हो

सकती

- हाई जम्प (ऊँची कूद) तो छोड़ो लेकिन दौड़ भी नहीं लगा सकते
- प्लान बनायेंगे कि यह करेंगे, यह करेंगे लेकिन सफल नहीं हो सकते
- बाप को अर्पण किया हुआ अपना तनमन वा ईश्वरीय सेवा अर्थ मिला हुआ धन, अपने विघ्नों के कारण वेस्ट करती है अर्थात् सफ़लता नहीं पाती, उसके वेस्ट करने का भी बोझ चढ़ता है

➳ _ ➳ **पापों की गहन गति को भी अच्छी रीति जानो**

→ अब क्या करना है?

- वेस्ट मत करो और वेट कम करो
- **धर्मराज पुरी में जाने के पहले अपना धर्मराज बनो**
- अपना पूरा चोपडा खोलो और चेक करो पाप और पुण्य का खाता क्या रहा हुआ है, क्या जमा करना है
- विशेष स्वयं प्रति प्लान बनाओ
- पाप के खाते को भस्म करो
- पुण्य के खाते को बढ़ाओ
- **ब्राह्मणों की कमाई जमा करने की मौसम है, तो मौसम प्रमाण तीव्र रफ्तार से जमा करो**